मिलत महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी, दरभंगा (L.N.M.U)

मैथिली प्रातिष्ठा
स्नातक - तृतीय खण्ड
पंचम पत्र - मैथिली साहित्यक इतिहास
(आधुनिक काल)

नरेश कुमार
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
दिनांक 30/07/2020

व्याख्यानक संक्षिप्त अंश

(प्रथम भाग)

प्रश्न आधुनिक मैथिली गद्यक विकास परम्परा निर्दिष्ट करु।

उत्तर :- कोनो साहित्यक सर्वाङ्गीण विकास तखन मानल जाइछ जखन ओहि साहित्यमे प्रौढ़ गद्यक निर्माण होइछ। पद्य आ गद्य साहित्यक दू विशिष्ट रूप थिक। दुहू समाजक हेतु उपयोगी अछि आ दुहुक अपन अलग-अलग महत्व होइछ। संसारक समस्त प्रमुख भाषा मे पहिने पद्यक रचना भेल तखन गद्यक। एहि दृष्टिसँ गद्य साहित्यक विकासित रूप कहल जाइछ। मनुष्यक दैनिक जीवन मे गद्य-पद्यक अपेक्षा विशेष निकट अछि। हमरा लोकनि अपन विचारकेँ गद्यक माध्यमसँ व्यक्त करैत छी। आचार्य लोकनि गद्यकेँ कविक कसौटी सिद्ध करने छथि।

मैथिली गद्यक आरम्भ कहिया भेल, एहि सम्बन्धमे एक मत नहि अछि। भाषा वैज्ञानिक लोकनि सिद्ध कयलनि अछि जे 900 ई०क करीब मागधी प्राकृतसँ मैथिली भिन्न भए गेल आ ताहि कालसँ मैथिलीमे स्वतंत्र रूपसँ रचना होमए लागल। मैथिली गद्य रचना प्राय: ताहि कालसँ आरम्भ भेल। गद्यक प्रथम प्रमाणिक पोथी ज्योतिरीश्वर ठाकुर लिखित वर्णरत्नाकर भेटैत अछि। एकर गद्यक प्रवाह, अभिव्यंजना शक्ति एवं प्रौढ़ता एहि दिश संकेत करैत अछि जे एहिसँ पूर्व सेहो मैथिलीमे कतेको गद्य ग्रन्थ लिखल गेल होएत, मुदा ओ अखन धरि प्राप्य नहि अछि।

30/07/2020